राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

28 अंक : 1 जनवरी 2005

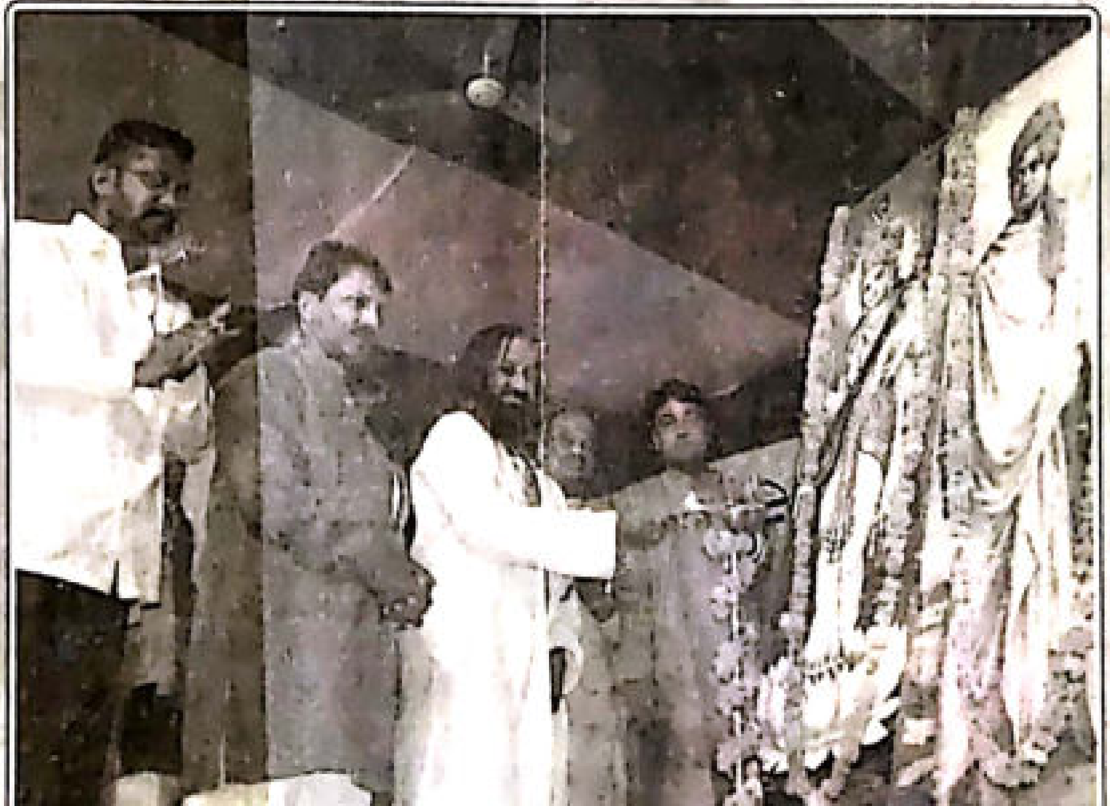

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

प्रेरणादायी ऊर्जा-स्रोत थे मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी

जिस व्यक्तित्व ने हजारों लाखों व्यक्तियों को देश-प्रेम, स्वदेशी, संगठन शक्ति व व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का ध्येय सिखाया था आज वही जीवंत व्यक्तित्व निश्चल, प्राणहीन हो गया। इस महामुनि के पार्थिव ,शरीर के चारों ओर हजारों स्वयंसेवक नम आंखों के साथ खड़े हुए थे, जिन्हें सहज ही विश्वास नहीं हो रहा था कि जिनकी प्रेरणा से वे सभी राष्ट्र के सेवा कार्यों में संलग्न हैं आज वही उनसे बिछुड़ गये हैं। शान्त, सौम्य व आभायुक्त चेहरा दिखाई दे रहा था, मगर दिखाई नहीं दे रहे थे तो उसमें प्राण। सम्पूर्ण देश में शोक लहर फैल गई थी जब पता चला कि युग पुरूष मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी का देहावसान हो गया है।

मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणादायी ऊर्जा स्रोत थे। 10 नवम्बर 1920 को महाराष्ट्र प्रान्त के वर्धा जिले के आर्वी गांव में ये महान कर्म योगी प्रकट हुआ। प्रारम्भ से ही ठेंगड़ी जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आ गये और नित्य रूप से शाखा जाने लगे। अध्ययन करने के बाद राष्ट्र सेवा को अपना उद्देश्य मानकर जीवन भर इसके लिए कार्य करने का संकल्प लेकर मात्र 22 वर्ष की युवावस्था में ही पारिवारिक जीवन का मोह त्याग कर एक कांटों भरी राह को अपनाकर संघ के प्रचारक बन गये जिससे भविष्य में राष्ट्र व राष्ट्र के युवाओं का मार्ग उज्ज्वल हो सके। केरल, असम एवं बंगाल आदि प्रान्तों में दुष्कर परिस्थितियां होने के बावजूद भी सहजता से कार्य किया और संघ कार्य का विस्तार किया।

अपनी विचारशीलता और कठोर परिश्रम के बलबूते ही ठेंगड़ी जी ने भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ और स्वदेशी जागरण मंच आदि संगठनों की नींव डाली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, सहकार भारती के संस्थापक सदस्यों में भी आप थे। ठेंगड़ी जी के ही मार्गदर्शन और प्रभावशाली निर्णयों का परिणाम रहा कि आज ये सभी संगठन अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में अग्रणी संगठन बन गये हैं। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि इन संगठनों के संस्थापक होने के कारण उनमें लेश मात्र भी अभिमान का उदय हुआ हो। जो निष्ठा उनमें संघ के प्रति प्रारम्भ में थी, वही निष्ठा जीवन के अन्त तक बनी रही। ठेंगड़ी जी की निष्ठा का पता केवल इसी घटना से चल जाता है कि जब भारत सरकार द्वारा इनको पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित करने की घोषणा की गई तो इन्होंने विनम्रतापूर्वक इस सम्मान को यह कह कर लेने से इंकार कर दिया कि जब तक पूज्य डा. हेडगेवार जी और पूज्य श्री गुरूजी को भारत रत्न से सम्मानित नहीं किया जाता है तब तक मैं यह सम्मान स्वीकार नहीं करूंगा। संघ को समाज से व समाज को संघ से कैसे जोड़ा जाये इसके लिए ठेंगड़ी जी हमेशा प्रयत्नशील रहे।

वे समय-समय पर आवश्यकतानुसार विभिन्न संगठनों का मार्गदर्शन भी किया करते थे। राजनीतिक क्षेत्र में भी आपका मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त हुआ। सन् 1951-53 में भारतीय जनसंघ मध्य प्रदेश के तथा सन् 1956-57 में दक्षिणांचल के संगठन मंत्री के नाते जनसंघ के कार्य को गति प्रदान की। मा. ठेंगड़ी जी 12 वर्षों तक राज्यसभा के सदस्य भी रहे लेकिन उन्होंने सादगी व शालीनता युक्त जीवन का कभी त्याग नहीं किया। मा. ठेंगड़ी जी एक श्रेष्ठ विचारक व मार्गदर्शक भी थे, जिसका पता उनके द्वारा विभिन्न विषयों पर विभिन्न भाषाओं में लिखी गई उच्च कोटि की किताबों से लगता है। कई राष्ट्रों का भ्रमण कर अनेक अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों में भारत राष्ट्र का प्रतिनिधित्व आपके द्वारा किया गया।

स्वदेश व हिन्दुत्व के प्रति उनकी सुविचारित, स्पष्ट व सरल एवं तार्किक व्याख्या के कारण अनेक बुद्धिजीवी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निकट आये और जो भ्रान्तियां संघ के प्रति उनके मन-मस्तिष्क में थी, उनको बड़ी ही सरलता और सहजता से इस श्रद्धेय ऋषि ने दूर कर दिया था। वृद्धावस्था में भी केन्द्र सरकार की गलत नीतियों के विरोध में सक्रिय रहे। वास्तव में देखा जाये तो तन से वे जरूर वृद्ध दिखाई देते थे लेकिन मन से वे युवा ही थे। 14 अक्टूबर 2004 को यह महामुनि इस नश्वर संसार से विदा लेकर एक अज्ञात यात्रा की ओर रवाना हो गया।

वर्तमान में राष्ट्र के समक्ष कई चुनौतियां हैं। कई स्थानों पर संघर्ष हो रहा है। अतः ऐसे समय में उनके जाने पर उनकी कमी इस राष्ट्र को हमेशा खलेगी।

यतेन्द्र शर्मा

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा क्षेत्र का प्रतिनिधि मासिक

अंक : जनवरी 2005

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ सं.
50वां राष्ट्रीय अधिवेशन	4
राष्ट्रीय अधिवेशन: विहंगावलोकन	5
इतिहास और राष्ट्र गरिमा	8
स्वतंत्रता, वैज्ञानिक प्रगति और विवेकानंद	10
आतंकवादी कुचक्र और हम	12
विचार कणिका	14

मुख पृष्ठ
राष्ट्रीय अधिवेशन का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्‌घाटन करते हुए श्री श्री रविशंकर, साथ में हैं परिषद के अध्यक्ष एवं महामंत्री

प्रकाशक
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्
बी-50, क्रिश्चियन कालोनी, निकट पटेल चेस्ट हॉस्पिटल, दिल्ली-110007
फोन : 27666019, 27662477

मुद्रक :
ग्राफिक वर्ल्ड, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय

चौथाई शती पूर्व प्रारंभ हुई यह पत्रिका अपरिहार्य कारणों से बीच-बीच में बंद होती रही। परंतु अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के रूप में छात्र शक्ति की राष्ट्रीय अभिव्यक्ति के अदम्य यज्ञ के अंग के रूप में उसका प्रकाशन भी पुन: होता रहा। हाल ही में २९ से ३१ अक्टूबर २००४ तक अभाविप का ५०वां राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में संपन्न हुआ। परिषद के जीवन में यह एक ऐतिहासिक अवसर था। उसी अवसर से जोड़कर पत्रिका फिर प्रकाशित की जा रही है।

१९४८ में स्थापित व अर्धशती से अधिक आयु की अभाविप राष्ट्रनिर्माण में छात्रों के योगदान के लिए प्रयत्नशील रहती है। 'छात्र कल का नहीं आज का नागरिक है' की आस्था को आधार बनाकर परिषद छात्रशक्ति का संचय करती है ताकि वह राष्ट्रशक्ति सिद्ध हो सके। परिषद की यह आस्था उसके द्वारा की गई खोज (डिस्कवरी) पर आधारित है। परिषद ने यह खोजा है कि राष्ट्रजीवन में युवा वर्ग की जिस भूमिका का बार-बार उल्लेख होता है उसे निभाने के लिए छात्र वर्ग सबसे उपयुक्त माध्यम है।

दूसरे शब्दों में कहें तो परिषद भारत में सार्थक छात्र आंदोलन (मूवमेंट) के लिए कार्यरत है। १९७०-७१ से परिषद निरंतर यह कार्य कर रही है और उसके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय व प्रांतीय स्तरों पर सार्थक छात्र आंदोलन के अनेक अनुभव देश को हुए हैं और हो रहे हैं। १९७४-७५ में जिन्होंने इस आंदोलन का प्रत्यक्ष अनुभव लिया था और जो छात्र आंदोलन की वांछनीयता में विश्वास रखते हैं उन्हें यह भ्रम हो रहा है कि भारत का छात्र आंदोलन मर गया है। निस्संदेह कालक्रम में आंदोलन मरते भी हैं। पर ऐसा तब होता है जब उस आंदोलन के लिए प्रयत्न करने वालों की इच्छा शक्ति अथवा संगठन क्षमता क्षीण हो जाये। भारतीय छात्र आंदोलन के संदर्भ में यह दोनों बातें लागू नहीं होतीं। अभाविप की इच्छाशक्ति आज भी वैसी है जैसी तीन दशकों पूर्व थी और उसकी संगठन क्षमता तो पहले से कहीं अधिक बलवान है। इसलिए उसके प्रयत्नों से चल रहा आंदोलन निश्चित ही जिंदा है। हमारा यह प्रयास रहेगा कि आने वाले समय में पत्रिका के अंकों के माध्यम से उसका दर्शन छात्र जगत व समाज को हो।

अभाविप का ५०वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

छात्र जीवन अपने व्यक्तित्व के विकास का एक अवसर : श्री श्री रविशंकर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 50वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकर जी महाराज ने किया।

अधिवेशन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा "छात्र जीवन अपने व्यक्तित्व के विकास करने का एक सुवर्ण अवसर है।"

श्री रविशंकर ने छात्रों को 'डीप रूट-ब्रॉड मिशन' का संदेश दिया। उन्होंने कहा- जिनसे हमारा वैचारिक मतभेद हो, उन तक अपनी बात रखना वैशिष्ट्य है। इसी तरह हम अपनी बात दूसरे विचार वाले लोगों तक पहुंचा सकते हैं। यदि सामने बैठा व्यक्ति आपकी बातों में हाँ में हाँ मिला रहा हो फिर उससे बात करने का लाभ नहीं है। उन्होंने आगे कहा- एक व्यक्ति का चलना सरल है। अपने विरोध के दस लोगों को लेकर चलना कठिन। अपने साथ लोगों को लेकर चलने की आदत डालो। श्री रविशंकर ने कहा- बढ़ती आत्महत्या, बढ़ती हिंसा, आत्मग्लानि, इन सबका मूल कारण है, हम अपने आप से दूर होते जा रहे हैं। श्री रविशंकर ने सात ऐसी चीजों का जिक्र किया, जिस पर भारत को गर्व करना चाहिए। इनमें पहला है, आध्यात्मिक विद्या, जिसका पूरी दुनियां में 27 बिलियन डालर का उद्योग है। हम हाल-फिलहाल तक इस अनमोल धरोहर की कीमत नहीं समझ पाये थे। दूसरा है आयुर्वेद, जिसे भारत में उचित सम्मान नहीं मिल पाया। किन्तु विदेशों में इसे आज सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति माना गया है। तीसरा है भारत की वेश-भूषा, पोषाक, चौथा यहां के गहने-आभूषण, पांचवां भोजन की विविधता, छठा भारतीय नृत्य और संगीत और सातवां है आई. टी. (इनर ट्रांसफोरमेन्स)। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता भारत को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्रों में अग्रणी बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे।

परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. कैलाश शर्मा ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद प्रवाहमान छात्रों का एक स्थायी संगठन है। श्री शर्मा ने इस अखिल भारतीय कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रान्तों से आये प्रतिनिधियों से भरे-पूरे पृथ्वीराज चौहान नगर को लघु भारत की संज्ञा दी। श्री शर्मा ने छात्रों को विध्वंसक बताने वाले लोगों को आड़े हाथों लेते हुए कहा- जो लोग छात्रों को विध्वंसक बताते हैं वे ऐसे लोग हैं, जो छात्रों का इस्तेमाल करते हैं। यह छात्र शक्ति विध्वंसक नहीं, राष्ट्रशक्ति है।

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद्

नवीन पदाधिकारी सूची

अध्यक्ष	:	डॉ. कैलाश शर्मा, जयपुर
उपाध्यक्ष	:	श्री रामनरेश सिंह, सहरसा
		डॉ. रेनू माथुर, झांसी
		श्री मिलिन्द मराठे, ठाणे
		श्री पी. मुरली मनोहर, महबूब नगर
		डॉ. नागेश ठाकुर, शिमला
महामंत्री	:	श्री के. एन. रघुनंदन, बैंगलोर
मंत्री	:	श्री प्रवीण घुगे, मुम्बई
		डॉ. मुक्ता शर्मा, चण्डीगढ़
		श्री मंत्री श्रीनिवास, हैदराबाद
		श्री विष्णु दत्त शर्मा, जबलपुर
		श्री धर्मपाल सिंह, आगरा
संगठनमंत्री	:	श्री सुनील अम्बेकर, मुम्बई
सहसंगठनमंत्री	:	श्री बी. सुरेन्दन, चेन्नई
		श्री अतुल कोठारी, दिल्ली
कोषाध्यक्ष	:	श्री विजय वैद्य, मुम्बई
कार्यालयमंत्री	:	श्री शरद चव्हाण, मुम्बई

राष्ट्रीय अधिवेशन : विहंगावलोकन

देशपाण्डे दम्पति को केलकर सम्मान

ग्रामीण क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए कारीगर पंचायत के महाराष्ट्र के अमरावती जिले में वनवासी विस्तार में कार्य करने वाले श्री सुनील देशपाण्डे एवं सौ. निरूपमा देशपाण्डे को इस वर्ष का प्रा. यशवन्त राव केलकर युवा पुरस्कार प्रदान किया गया। देशपाण्डे दम्पती को पच्चीस हजार रूपये की राशि, स्मृतिचिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर खादी ग्रामोद्योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री महेश शर्मा ने सम्मानित किया।

गत् वर्ष तक केलकर पुरस्कार के रूप में दस हजार रूपये की राशि दी जाती थी। इस वर्ष से इस राशि को बढ़ाकर पच्चीस हजार रूपये कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि विद्यार्थी परिषद प्रत्येक वर्ष देश-समाज के लिए विशिष्ट कार्य करने वाले युवा को गत 12 वर्षो से यशवन्त राव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित कर रही है।

पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन - 50वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर सभी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, क्षेत्रीय संगठन मंत्री और प्रदेश संगठन मंत्रियों का एक सम्मेलन अधिवेशन स्थल पर ही आयोजित किया गया जिसमें प्रमुख रूप से संगठन के प्रथम पूर्णकालिक मा0 गिरिराज किशोर जी, प्रथम राष्ट्रीय महामंत्री मा0 केशव देव शर्मा जी, मा0 मदनदास जी, मा0 मोहन राव भगवत जी, मा0 दत्तात्रेय होसबले जी सहित 56 कार्यकर्ता उपस्थित थे।

इसमें दो सत्र सम्पन्न हुए जिनमें सभी ने अपने पुराने संस्मरण ताजा किये और समाज व विभिन्न क्षेत्रों में किये कार्यों के अनुभवों का परस्पर आदान-प्रदान किया।

सम्मेलन का संचालन मा. राजकुमार भाटिया और सुश्री गीता गुण्डे जी द्वारा किया गया। इसका समापन मा. मदनदास जी द्वारा हुआ।

विदेशी अतिथि छात्र सम्मेलन- इस अधिवेशन में भारत में पढ़ रहे विदेशी छात्र-छात्राओं को भी आमंत्रित किया गया। इनका भी अलग से अधिवेशन स्थल पर ही सम्मेलन किया गया जिसमें 7 देशों (जापान, श्रीलंका, तिब्बत, भूटान, नेपाल, मॉरिशस तथा केन्या) के 37 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। इस सम्मेलन में विदेशी छात्रों द्वारा सुझाव आया कि उन्हें आगे भी विद्यार्थी परिषद के माध्यम से जुड़े रहना चाहिए।

अ.भा.वि.प. के विषय में विदेशी छात्रों ने जानकारियां प्राप्त कीं एवं इसके अतिरिक्त विदेशी छात्र-संगठनों के विषय में जानकारियों का आदान-प्रदान हुआ।

इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि स्वागत समिति के महामंत्री श्री सुनील भार्गव थे। अध्यक्षता विश्व विद्यार्थी युवा संघ के महामंत्री श्री दत्तात्रेय होसबले जी ने की। इसका संचालन विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री रमेश पप्पा ने किया।

खुला अधिवेशन- अधिवेशन के दूसरे दिन विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें प्रांतों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। अन्त में शोभा यात्रा जयपुर के बड़ी चौपड़ नामक स्थान पर जाकर खुले अधिवेशन में परिवर्तित हो गई।

खुले अधिवेशन को वक्ता के रूप में राष्ट्रीय महामंत्री श्री के.एन. रघुनंदन, पंजाब के प्रदेश संगठन मंत्री श्री सुभाष, राष्ट्रीय मंत्री श्री विष्णुदत्त, छत्तीस गढ़ की प्रदेश सह मंत्री सुश्री अर्चना उखरे जी ने सम्बोधित किया। इसका संचालन राजस्थान प्रान्त के प्रदेश मंत्री श्री छगन माहौर ने किया।

प्रदर्शनी उद्घाटन- प्रदर्शनी उद्घाटन प्रसिद्ध चित्रकार पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थी परिषद के सभी 50 अधिवेशनों की जानकारी, आंदोलन एवं विभिन्न प्रकल्पों का चित्रण, वनवासी समुदायों की समस्याएं, उनकी स्थिति तथा राजस्थान की वीर गाथाओं पर प्रकाश डाला गया।

इस प्रदर्शनी कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि जयपुर की महापौर रहीं।

रोजगार वेबसाइट-डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.यूथइंडिया.आर्ग- इस

अधिवेशन का मुख्य आकर्षण रही ये रोजगार वेबसाइट। जब प्रत्येक क्षेत्र में रोजगार की संख्या में कमी का सामना युवाओं को करना पड़ रहा हो तो ऐसी उपयोगी वेबसाइट से एक आशा की किरण दिखाई देती है।

डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.यूथइंडिया.आर्ग नामक इस वेबसाइट का विमोचन श्री रविशंकर जी द्वारा 50वें अधिवेशन में किया गया। बेरोजगार युवकों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना और उनका मार्गदर्शन यह वेबसाइट करती है। विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए इस वेबसाइट से कई महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं।

राष्ट्र गौरव यात्रा- अ.भा.वि.प. ने स्वतन्त्रता संग्राम के भुला दिये गये वीरों के प्रति सम्मान जागृत करने के लिए राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के मानवगढ़ से 23 अक्टूबर को एक राष्ट्र गौरव यात्रा का शुभारम्भ किया। इसके मुख्य अतिथि राजस्थान के गृह मंत्री श्री गुलाब सिंह कटारिया, मुख्य वक्ता-राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री अतुल भाई कोठारी तथा यात्रा के संयोजक श्री वीरेन्द्र सिंह थे।

लगभग 800 किलोमीटर लम्बी यह यात्रा राजस्थान के कई ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व के स्थानों से गुजरी। इस यात्रा का समापन 28 अक्टूबर को अधिवेशन स्थल पर ही हुआ।

श्रद्धांजलि- भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ तथा स्वदेशी जागरण मंच के संस्थापक और विद्यार्थी परिषद के संस्थापक सदस्य महान कर्मयोगी मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी जी को अधिवेशन स्थल पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मा. मोहनराव भागवत जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. कैलाश शर्मा जी एवं समस्त कार्यकर्ताओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

समारोप- 21 अक्टूबर 2004 को प्रारंभ हुए इस अधिवेशन के स्थल का नाम पृथ्वीराज चौहान नगर, एवं सभा मण्डप का नाम राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका मा. लक्ष्मीताई केलकर जी के नाम पर रखा गया था।

31 अक्टूबर 2004 को इस 50वें राष्ट्रीय अधिवेशन का समापन हुआ। समारोप सत्र को अ.भा. संगठन मंत्री मा. सुनील अम्बेकर द्वारा सम्बोधित किया गया।

संख्या- 451 जिलों से 1226 स्थानों के कुल 5046 प्रतिनिधि सहभागी हुए जिसमें 4053 छात्र, 733 छात्राएं, 235 शिक्षक तथा 25 अन्य कार्यकर्ता सम्मिलित थे।

यतेन्द्र शर्मा

प्रमुख आंदोलन

__प. बंगाल__ - राज्य सरकार द्वारा शिक्षा का वामपंथीकरण एवं बांग्ला भाषा से छेड़-छाड़ के खिलाफ प. बंगाल विद्यार्थी परिषद द्वारा "चलो मंत्रालय" नाम से 6 अक्टूबर 2004 को एक विशाल प्रदर्शन किया गया। इस आन्दोलन के अन्तर्गत 100 कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी हुई। लगातार 3 दिनों तक बरसात होने के बावजूद भी 3000 से अधिक छात्र-छात्राओं ने इस आन्दोलन में सहभागिता करके राज्य सरकार की शिक्षा नीतियों के खिलाफ रोष प्रकट किया।

इस विशाल प्रदर्शन को पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री रमेश पप्पा एवं प. बंगाल के छात्र नेताओं ने सम्बोधित किया।

__नागपुर-__ नागपुर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि श्री अर्जुन सिंह का आना निश्चित हुआ जिसका विद्यार्थी परिषद और अन्य छात्र संगठनों ने जमकर विरोध-प्रदर्शन किया। विद्यार्थी परिषद के दो कार्यकर्ताओं ने अर्जुन सिंह के हाथों से गोल्डमैडल लेने से इंकार कर दिया और विरोध किया। विश्वविद्यालय के उपकुलपति का घेराव किया। फलस्वरूप श्री अर्जुन सिंह ने दीक्षांत समारोह में आना स्थगित कर दिया।

__आंध्रप्रदेश__ - आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा मुस्लिम आरक्षण विधेयक पारित करने का विद्यार्थी परिषद ने विरोध किया। प्रदेश भर में स्थान-स्थान पर कार्यक्रम किये और रैलियां निकाल कर विरोध प्रदर्शन किया। हैदराबाद में 6 हजार छात्र-छात्राओं की एक विशाल रैली का भी आयोजन किया गया। परिषद के कार्यकर्ताओं ने कोर्ट में एक जनहित याचिका भी दायर की जिसके परिणाम स्वरूप कोर्ट ने उक्त विधेयक को अमान्य कर दिया।

__उत्तर प्रदेश-__ उत्तर प्रदेश विद्यार्थी परिषद द्वारा 21 जुलाई 2004 को शैक्षिक मांगों के संदर्भ में लखनऊ में एक रैली का आयोजन किया और उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव को ज्ञापन दिया। फलस्वरूप कई मांगों को उन्होंने मान लिया और त्वरित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

यतेन्द्र शर्मा

इतिहास बताने के नाम पर शिक्षा में छेड़छाड़ स्वीकार नहीं- राजपूत

उरई। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 44वें प्रदेश अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक डा. जे. एस. राजपूत ने कहा कि सार्थक शिक्षा से वातावरण में बदलाव लाया जा सकता है। शिक्षा में भगवाकरण का आरोप लगाकर नहीं। जब से केन्द्र में संप्रग सरकार पदारूढ़ हुई है, उसी दिन से इतिहास बताने के नाम पर पुस्तकों से छेड़छाड़ की जा रही है। शिक्षा में राजनीतिक हस्तक्षेप बन्द होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब मैं एनसीईआरटी का निदेशक बना तो पुस्तकों में जो गलत तथ्य लिखे थे उन्हें निकालने की प्रक्रिया शुरू की गई, तो शिक्षा के भगवाकरण का आरोप लगा दिया गया। श्री राजपूत ने कहा कि मेरे कार्यकाल में 220 पुस्तकों में जो परिवर्तन हुआ। वह किसी धर्म के पक्ष या विरोध में नहीं था बल्कि तथ्यात्मक दृष्टि से उचित था। एक पुस्तक में लिखा था कि गुरू तेगबहादुर को मुगलों ने फांसी दी। इससे पढ़ने वाले बच्चे तो यही समझेंगे कि गुरू तेगबहादुर ने कोई बलिदान नहीं किया। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद को आतंकवादी बताया गया। इस सब बातों को सुधारने की कोशिश को विरोधियों ने भगवाकरण का नाम देना शुरू कर दिया।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री ओमपाल सिंह ने अपने सम्बोधन में युवा वर्ग को देश की असली ताकत बताकर उनके चरित्र निर्माण की बात की। श्री सिंह ने युवाओं को अपने दायित्वों के प्रति सजग रहने की सीख दी उन्होंने कहा कि देश की सेवा सबसे अहम है। इसे छात्रों के बीच ले जाने की आवश्यकता है। छात्र शाश्वत सत्य की खोज करने वाला युवा होता है। वह मोमबत्ती की तरह पिघलकर पुन: मोमबत्ती बनकर प्रकाशवान होता है। अधिवेशन का समापन परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री विष्णुदत्त ने किया।

राष्ट्रीय अधिवेशन में तीन प्रस्ताव पारित

50वें राष्ट्रीय अधिवेशन में कुछ संशोधनों के साथ चर्चा सत्र में तीन प्रस्ताव पारित किए गए।

पहला प्रस्ताव- *'शिक्षा का व्यापारीकरण बन्द हो' शीर्षक का प्रस्ताव विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री के. एन. रघुनंदन ने सदन के सामने रखा। प्रस्ताव में यू.पी.ए. सरकार की शिक्षा में व्यापारीकरण को बढ़ावा देने वाली नीति का विरोध करते हुए केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों से शिक्षा-व्यय बढ़ाने और भारतीय शिक्षा विकास बैंक (ई.डी.बी.आई.) की स्थापना की मांग की गई। 1995 में राज्य सभा में रखे गये निजी विश्वविद्यालय के बिल पर संसद में बहस हो एवं जब तक पूर्व में खोले गये निजी विश्वविद्यालयों का आकलन प्रस्तुत नहीं होता तब तक किसी भी राज्य को नये विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति नहीं दिए जाने जैसी मांगे रखी गई हैं। इस प्रस्ताव का अनुमोदन दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) की पूर्व सचिव दीप्ति रावत ने किया।*

दूसरा प्रस्ताव- *बिहार प्रदेश के संगठन मंत्री श्री गोपाल शर्मा ने यह प्रस्ताव सदन के सामने रखा। इस प्रस्ताव का शीर्षक "शिक्षा का अभारतीयकरण एवं राजनीतिकरण का दुस्साहस" था। प्रस्ताव में यूपीए सरकार की अल्पसंख्यक तुष्टिकरण नीति और अर्जुन सिंह के अलोकतांत्रिक, अदूरदर्शी एवं राजनीति प्रेरित प्रयासों की निन्दा की गई। प्रस्ताव में यह महसूस किया गया है कि राष्ट्रीय स्वाभिमान को बनाये रखने के लिए शिक्षा, अनुसंधान, संस्कृति, मीडिया एवं प्रकाशन आदि बौद्धिक क्षेत्रों में वामपंथी प्रभाव को दूर किया जाना आवश्यक है। इस प्रस्ताव का अनुमोदन असम के राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद के सदस्य समरजीत ने किया।*

तीसरा प्रस्ताव- *'राष्ट्रीय परिदृश्य' प्रस्ताव राष्ट्रीय मंत्री एवं पश्चिम उत्तर प्रदेश के संगठन मंत्री धर्मपाल ने प्रतिनिधियों के समक्ष रखा। प्रस्ताव में अवैध प्रवासी अधिनियम 1983 (आई.एम.डी.टी.एक्ट) को रद्द करते हुए अवैध घुसपैठ रोकने हेतु प्रभावी कानून बनाये जाने की मांग, जम्मू कश्मीर सरकार से हीलिंग टच जिसमें आत्मसमर्पण करने वाले आतंकवादियों को दो लाख रुपये तथा प्रतिमाह दो हजार रूपये भत्ता देने के प्रावधान को शीघ्र समाप्त कर आतंकवादियों के खिलाफ कड़े कदम उठाये जाने की मांग की। देश में विदेशों से आयातित कबाड़ में बड़ी मात्रा में मिले हथियारों से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न हुआ है। देश हित में इस पूरे मामले की जांच करते हुए सच को देश के सामने लाये जाने की मांग तथा खेल जगत में राजनीतिक हस्तक्षेप रोकने की मांग की गई। अंडमान कारागार में स्वातंत्र्य वीर सावरकर की वाणी लिखे फलक को निकालने का आदेश केन्द्रीय पैट्रोलियम मंत्री द्वारा दिये जाने और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के जीवन चरित्र पर बनी फिल्म के प्रदर्शन पर रोक की भर्त्सना की गई। इस प्रस्ताव का अनुमोदन गुजरात के संगठन मंत्री श्री चेतस ने किया।*

इतिहास और राष्ट्र गरिमा

- डा. नरेन्द्र कोहली

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि आज तक का हमारा इतिहास विदेशियों ने ही लिखा है। उसमें हमारे गौरव की चर्चा न होकर हमारी तुच्छताओं का ही अधिक वर्णन है। उसमें हमारी विजय नहीं, हमारी पराजय ही रेखांकित की गई है। अब आवश्यक है कि हम अपने देश को अपनी आंखों से देखें, उसके इतिहास को स्वयं खोजें और पढ़ें, और सबसे बड़ी बात है कि अपने देश पर गर्व करना सीखें। उसके पश्चात् हम अपना इतिहास स्वयं लिखें, ताकि हम और हमारी आने वाली पीढ़ियां यह जान सकें कि हम किस महान देश की संतान हैं।

तुर्क, मुगल, अरब, पठान, अंग्रेज, पुर्तगाली या फ्रांसीसी हमारा इतिहास हमें शिक्षित करने के लिए नहीं लिख रहे थे। वे हमारा इतिहास लिख रहे थे; क्योंकि वे हमें राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानसिक दृष्टि से अपना दास बनाए रखना चाहते थे। परिणामत: उनसे शिक्षा पाकर हमारा देश न तो सुशिक्षित हो सका और न ही स्वयं पर गर्व कर सका। ऐसे विद्वानों के लिए ही एक शताब्दी पूर्व श्री अरविन्द ने 'पश्चिमीकृत मस्तिष्क' विशेषण का प्रयोग किया था। ऐसे लोग भारत के लिए विदेशियों से भी अधिक घातक सिद्ध हुए हैं।

1947 में भारत स्वाधीन तो हो गया, किंतु स्वतंत्र वह आज तक नहीं हो पाया। तंत्र आज भी विदेशियों का ही चल रहा है। यही कारण है कि इतिहास, भूगोल अथवा समाजशास्त्र ही नहीं विज्ञान में भी आज तक हमारे विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में वही पढ़ाया जा रहा है, जो अंग्रेज हमें पढ़ाते रहे हैं। विज्ञान में मात्र सिद्धांत पढ़ाए जाते हैं, किन्तु हम जानते हैं कि पाश्चात्य देशों और सोवियत रूस में पढ़ाए जाने वाले विज्ञान में अलग-अलग आविष्कारों का श्रेय अपने-अपने देश के वैज्ञानिकों को दिया जाता था। अर्थात वे अपना-अपना विज्ञान पढ़ाते थे। हमारे यहां गणित में वैदिक गणित नहीं पढ़ाया जाता, वराहमिहिर और चरक तथा जीवक का नाम नहीं लिया जाता। अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र में चाणक्य का नाम लेना भी वर्जित है। मनोविज्ञान में गीता के सिद्धांतों की हवा भी नहीं लगने दी जाती। यह विचित्र बात है कि अपने देश की सरकार, अपने देश के धन से, अपने विश्वविद्यालयों में अपने युवावर्ग को एक विदेशी भाषा में विदेशी महानता की शिक्षा देने में गर्व का अनुभव करती है। निर्णय करना कठिन है कि इसमें जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद और हुमायूँ कबीर जैसे लोगों का कितना योगदान है, कितना श्रेय आज के जड़ कटे बुद्धिजीवियों का है।

हमारे विद्यालयों के लिए जो पाठ्यपुस्तकें तैयार की गई, उनमें भारतीय गौरव कहीं नहीं है। बच्चों के लिए तैयार की गई महाभारत में अधूरे तथ्य हैं। धर्मराज युधिष्ठिर, कृष्ण तथा अर्जुन जैसे आदर्श चरित्रों की दुर्दशा की गई है। बाद में सिख गुरूओं के संदर्भ में भी अनेक बातें उभर कर सामने आईं, जहां गुरू तेगबहादुर जैसे आध्यात्मिक देशभक्त महापुरूष को लुटेरा चित्रित किया गया था।

अंग्रेजों ने यदि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को गदर कहा तो उनका तर्क समझ में आता है। वे अपना सत्य लिख रहे थे, अपने पक्ष के हितों की रक्षा करने के लिए भारत का इतिहास लिख रहे थे, किंतु जब भारतीय विद्वान अपने देश को आर्य और द्रविड़ दो जातियों में बांटते हैं और आर्यों को विदेश से आया हुआ बताते हैं, तो न उनका स्वार्थ समझ में आता है और न देशद्रोह। उन्होंने तो हिंदुओं के देवी-देवताओं और उपासना पद्धतियों को भी आर्य और द्रविड़ में बांट दिया है। अभी ईश्वर सुरक्षित है। वे आर्य, द्रविड़ तथा अन्य वर्गों में नहीं बंटे हैं। अंग्रेज अमरीका गए थे तो वहां उन्होंने न्यू इंगलैंड बसाया था। भारत का विभाजन हुआ तो पश्चिमी पंजाब से आए लोगों ने पीछे छोड़े अपने नगरों के नाम पर अनेक मुहल्ले और बस्तियां बसाईं। क्या हमारे इन पश्चिमीकृत देशी इतिहासकारों को कहीं तथाकथित विदेशी आर्यों द्वारा अपनी मातृभूमि की प्रशंसा में रचे गए सूक्त या मंत्र मिले हैं? क्या आर्यों ने भारत, गंगा तथा हिमालय के अतिरिक्त भी किसी और देश के सौन्दर्य का गुणगान किया है?

विद्यालयों के लिए तैयार की गई इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में भी इन स्वानामधन्य इतिहासकारों ने उन लोगों को असाधारण महत्व दिया है, जिन्होंने अपने देश को कलंकित करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया। राजा राममोहन राय की महानता यह है कि उन्होंने अंग्रेजों के साथ मिल कर इस देश में सतीप्रथा के विरूद्ध कानून बनाया। सारे यूरोप और अमरीका में यह प्रचारित हुआ कि हिंदू अपनी पत्नियों को जला देते हैं और पति

के मरने पर पत्नी को पति के शव के साथ जला दिया जाता है। तथ्य यह है कि राजा राममोहन राय की भाभी को उनके संबंधियों ने संपत्ति के लोभ में जीवित जला दिया था? यह तो चितारोहण भी नहीं था। यह स्पष्ट रूप से हत्या का अपराध था। हत्यारों को मृत्युदंड दिया जाना चाहिए था। इसमें एक प्रथा की चर्चा सर्वथा अनुचित है। हिंदुओं में चितारोहण की कभी प्रथा नहीं थी। सती की तो अवधारणा ही और है। सती तो कुंती, द्रौपदी और मंदोदरी थीं। इनमें से किसी ने भी चितारोहण नहीं किया। ऐसी अनेक घटनाएं मिलती अवश्य हैं, किंतु वह या तो भावना के अतिरेक में हुआ है या फिर एक अपराध के रूप में। इसे प्रथा नहीं कहा जा सकता। सती चितारोहण और जौहर में अंतर है। ऐसे में भारत पर तथाकथित सती प्रथा की कालिख पोतने (और संसार भर में हिंदू धर्म को कलंकित करने वाले) राजा राममोहन राय को एक महान् समाज सुधारक नाम दिया गया। उन्होंने हिंदुओं से पृथक् होकर ईसाई मत की छाया में ब्रह्मसमाज की एक स्वतंत्र धर्म के रूप में स्थापना की। ब्रह्मसमाज ने भारत में ही नहीं, शिकागो में हुई संसद में भी स्वयं को अहिंदू माना और हिंदुओं का विरोध करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया। राममोहन राय देश की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न न कर, अंग्रेजों के मित्र बने। उनके जीवन का लक्ष्य अंतिम मुगल शासक के लिए अंग्रेजों से पेंशन प्राप्त करना था। उन राममोहन राय का चरित्र तो देश की आगामी पीढ़ियों को पढ़ाने योग्य माना गया, और जिन्होंने देश, धर्म और संस्कृति के लिए अपना शीश कटा दिया, उन्हें लुटेरा चित्रित किया गया।

भारतीय संस्कृति और इतिहास के गौरव की चिंता करने वाले कुछ लोग जब सत्ता में आए, तो उन्होंने इस अनर्थ के विषय में चिंता दिखाई। गलत और अपमानजनक तथ्यों को पाठ्यपुस्तकों से निकालने का प्रयत्न किया। बस देशद्रोहियों और जड़ कटे तथाकथित बुद्धिजीवियों की ओर से शोर मच गया कि पुस्तकों का भगवाकरण किया जा रहा है। भगवाकरण के गौरव को वे नहीं जानते। इसीलिए इस प्रकार का नाम दे बैठे। वे नहीं समझ सके कि कालिमापुती पुस्तकों का भगवाकरण एक महान् यज्ञ है। वह तो खैर हो ही नहीं पाया, क्योंकि वह लंबा काम है। सहस्त्र वर्ष की दासता से कलुषित अपने रक्त को अमृत समझने वाले लोगों को समझाना कठिन है कि राष्ट्रीय गौरव क्या होता है? यह प्रभु की लीला है कि चुनाव हुए और सरकार पलट गई। अर्थात् वे ही लोग पुनः सत्ता में आ गए, जिन्होंने स्वाधीनता के पश्चात् भी इस देश के इतिहास पर कलुष ही पोता था। राष्ट्रीय चिंतनधारा के लोगों द्वारा इन पाठ्यपुस्तकों से अपमानजनक प्रसंग निकाल देने के लिए इतना शोर मचाने वाले लोगों ने अब गर्व से घोषणा कर दी है कि वे इन पुस्तकों को परिवर्तित करेंगे और देश के गौरव पर फिर से कालिख पोतेंगे।

इसमें ध्यान देने की बात तो यह है कि वे मानते हैं कि वे इस देश को कलंकित करने के लिए भी इतिहास लिखें तो उसे परिवर्तित करना अपराध है, किंतु उन्हें यह अधिकार है कि बड़े राष्ट्रभक्त का कलुषित चित्र प्रस्तुत करें। विदेशी और विधर्मी आक्रांताओं की स्तुति करें और उन्हें इस देश के लिए पूज्य बनाएं। इस देश, धर्म और संस्कृति को गौरव के शिखरों पर स्थापित करने वाली महान् आत्माओं की या तो उपेक्षा करें अथवा उन्हें अपमानित करें।

प्रश्न है कि साहित्य क्या है-देश की परंपरा के उत्तुंग शिखरों को चित्रित करने वाली रचनाएं अथवा विदेशों की जूठन परोस कर अपनी परंपराओं को ध्वस्त करने का प्रयत्न? इतिहास का स्वरूप क्या हो- जिसमें से राष्ट्र का गौरव झलकता हो और पूरे देश को उठ खड़ा होने तथा आगे बढ़ने के लिए बल मिलता हो, अथवा जिससे राष्ट्र अपमानित होता हो, और किन्हीं विदेशी और विधर्मी शक्तियों के हाथों बिके हुए, हमारे इतिहासकारों के सिरों पर विदेशी दासता के मुकुट शोभते हों।

तथ्यों को बदला नहीं जा सकता। किंतु यदि इतिहास लेखक चाहे तो अपने लिखे इतिहास में से किसी का भी नाम मिटा सकता है। किसी की उज्जवल छवि प्रस्तुत कर सकता है और किसी को काले रंगों में रंग सकता है। विदेशी और विधर्मी आक्रांताओं के नृशंस तथा राक्षसी अत्याचारों की चर्चा किए बिना भी आगे बढ़ सकता है, मंदिर तोड़ कर बनाई गई मस्जिदों के वास्तुशिल्प की प्रशंसा को ही इतिहास मान सकता है। आक्रमणकारी राक्षसों के विरूद्ध संघर्ष करने वाले देश और राष्ट्र की भक्ति से भरे वीरों को विद्रोही और लुटेरे के रूप में चित्रित कर सकता है। और आज तक मैकाले और मार्क्स के पुत्रों ने यही किया है।

अर्जुन सिंह की शह पर आज इरफान हबीब घोषणा कर रहे हैं कि वे पाठ्यपुस्तकों को हिंदुओं के प्रति विद्वेष की भावनाओं से आपूर्त करेंगे। प्रश्न यह है कि क्या यह देश बैठा देखता रहेगा कि ये राष्ट्रविरोधी शक्तियां देश के बच्चों को पढ़ाने के लिए झूठी कलुष कथाएं गढ़ती रहें और भारत माता के चेहरे पर कालिख पोतती रहें। क्या सारे देश में वही पढ़ाया जाएगा, जो पश्चिमी बंगाल में पढ़ाया जा रहा है। या पाकिस्तान से उनकी पाठ्यपुस्तकें आयात कर उन्हीं को भारत की अगली पीढ़ियों के सम्मुख ज्ञान के भंडार के रूप में परोसा जाएगा!

चरित्र-निर्माण तथा मानवीय गुणों के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। सच्ची शिक्षा वही है जो हमें संकीर्ण धार्मिक तथा सांप्रदायिक विचारों से ऊपर उठाकर विश्वबंधुत्व की भावना से युक्त करें। हम अपने अतीत के गौरव को समझें, सराहें और भविष्य की चुनौतियों का साहस के साथ सामना करें।

स्वतंत्रता, वैज्ञानिक प्रगति और विवेकानंद

(हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति में अगाध श्रद्धा तथा उसकी श्रेष्ठता और सनातनता का अटूट विश्वास। यह वह पाथेय है जिसे लेकर हर युग में, हर काल में भारत के युवाओं ने अपनी दिग्विजय यात्रा प्रारंभ की है। विवेकानंद की शिकागो यात्रा ऐसी ही एक यात्रा थी जिसने एक अनाम भारतीय सन्यासी को विश्व प्रसिद्ध बना दिया। श्री लक्ष्मीनिवास झुंझुनवाला ने स्वामी जी की इस यात्रा और इससे उत्पन्न प्रभाव का खोजपूर्ण अध्ययन किया है तथा अपनी पुस्तक "विश्व धर्म सम्मेलन १८९३" में इस का तथ्यपूर्ण विवेचन किया है। पठनीय एवं संग्रहणीय इस पुस्तक को प्रभात प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

भारत स्वतंत्र एवं सशक्त बने, स्वामी विवेकानंद ने इसके लिए न केवल स्वयं प्रयत्न किये अपितु तत्कालीन अनेकों लोगों को इस हेतु प्रेरित किया। स्वामी जी की जयंती, १२ जनवरी के अवसर पर इस पुस्तक से एक अंश साभार प्रस्तुत है जो कि उनके विलक्षण व्यक्तित्व के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालता है।)

भारत में आध्यात्मिक व राजनैतिक क्रांति का अग्रदूत यदि स्वामी विवेकानंद को कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्वामी जी सन् 1881 में श्री रामकृष्ण के संपर्क में आए तथा सन् 1886 में श्री रामकृष्ण की महासमाधि हो गई। पर पाँच वर्षों में ही गुरू ने शिष्य को इस लायक बना दिया कि वह क्रांति ला सके। स्वामी जी के जीवन में धर्म-सम्मेलन एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ था। इसके पहले वे एक अज्ञात सन्यासी थे। भारत में भी वे विख्यात नहीं हुए थे। विश्व का तो सवाल ही नहीं उठता। पर सत्रह दिन में धर्म-सम्मेलन ने इस तीस वर्षीय हिन्दू सन्यासी को जगत में विख्यात कर दिया था। इस पृष्ठभूमि में देखा जाए तो विश्व धर्म-सम्मेलन का भारत के लिए अत्यंत महत्व हो जाता है। सारे विश्व में हिन्दू धर्म को जानने की अभिलाषा जाग्रत हुई। सन् 1898 में जर्मन मैक्समूलर ने श्री रामकृष्ण की जीवनी लिखी।

स्वामी जी जनवरी 1897 में भारत लौटे और 1 मई 1897 को श्री रामकृष्ण के सन्यासी व गृहस्थ शिष्यों की सभा आयोजित कर रामकृष्ण संघ की स्थापना की। संघ की कार्यशैली का भी स्पष्ट निर्णय लिया गया। स्वामी जी ने इसके तीन उद्देश्य निश्चित किए- 1. हमें ऐसी शिक्षा देनी है जिससे देशवासियों की भौतिक व आध्यात्मिक प्रगति हो 2. कला व उद्योग का प्रसार 3. लोगों में वेदान्त का प्रचार श्री रामकृष्ण के जीवन के आधार पर हो।

भारत में भौतिकता की अत्यन्त अवहेलना हुई थी, पर फिर भी भारत इतना समृद्ध रहा कि सन् 1600 तक भी विश्व व्यापार का पच्चीस प्रतिशत हिस्सा भारत का रहा। वह घटते-घटते अब एक प्रतिशत से भी कम हो गया। स्वामी जी की धारणा थी कि विज्ञान व टेक्नोलॉजी का जो वैश्विक आन्दोलन गत चार सौ वर्षों में चला उससे भारत अछूता रह गया है। भारत की वैज्ञानिक प्रगति पर अब रामकृष्ण संघ ध्यान देगा। संघ की प्रत्येक शाखा केवल धर्म तक सीमित नहीं रहेगी, पर उसके साथ-साथ एक टेक्निकल इंस्टीच्यूट रहेगा, यह प्रथम करणीय है। अन्य सुविधाएँ पीछे क्रमश: जुट जायेंगी। भारत के प्रमुख समाजशास्त्री प्रोफेसर विनय कुमार सरकार ने कहा है कि ''जिस प्रकार कांट को पश्चिमी भौतिकवाद का जनक कहा जाता है, उसी प्रकार विवेकानंद को मैं भारत में भौतिकवाद का जनक मानता हूँ।''

स्वामी जी जिस जहाज से जापान से अमेरिका जा रहे थे उसी जहाज से श्री जमशेद जी टाटा भी यात्रा कर रहे थे। दोनों ने जापान के भिन्न-भिन्न स्थानों पर एक साथ भ्रमण किया होगा। जापान के कुछ औद्योगिक संस्थान भी देखे होंगे। विवेकानंद भारत में वैज्ञानिक प्रगति के स्वप्न देख रहे थे। उधर जमशेद जी टाटा भी भारत में अमेरिका के जॉन हापकिंस या क्लार्क की तरह के शैक्षणिक संस्थानों के स्वप्न देख रहे थे, जहाँ उच्च कोटि के वैज्ञानिक अनुसंधान संभव हो सकें। भारत पराधीन था, फिर भी जमशेदजी टाटा ने भारत में प्रथम भारतीय स्टील प्लांट स्थापित करने की योजना बनाई तथा उस पर काम भी आरंभ कर दिया। स्टील प्लांट के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र अत्यावश्यक था। उसी सिलसिले में वे अमेरिका जा रहे थे, जब रास्ते में उनकी स्वामी जी से मुलाकात हुई। यह सन् 1893 की बात है।

जमशेद जी टाटा ने 23 नवंबर, 1898 को स्वामीजी को निम्न पत्र लिखा।

प्रिय स्वामी विवेकानंद,

आपको शायद जापान से शिकागो यात्रा में अपने इस सहयात्री की स्मृति होगी। आपने चर्चा की थी कि भारत की त्याग की प्रवृत्ति को नष्ट न करके उसका रचनात्मक दिशाओं में प्रयोग करना चहिए।

मैं आपको 'रिसर्च इंस्टीच्यूट ऑफ इंडिया' योजना की

पृष्ठभूमि में लिख रहा हूँ। इसकी जानकारी आपको पत्रिकाओं से अवश्य हो गई होगी। भारत की सन्यासी प्रवृत्ति का उपयोग देश में मठों व आवासीय स्थानों के निर्माण में होना चाहिए, जहाँ इस प्रवृत्ति के लोग जीवन की साधारण सुविधाएँ प्राप्त कर सकें व अपना जीवन विज्ञान व शिक्षा की प्रगति के लिए समर्पित कर सकें। मेरी राय है कि ऐसे सन्यासियों के आविर्भाव का धर्म-युद्ध प्रारंभ करने के लिए योग्य नेता की आवश्यकता होगी। हम दोनों की ही मातृभूमि के गौरव तथा सन्यास-वृत्ति व विज्ञान की शोभा इस कार्य से बढ़ेगी। विवेकानंद से अधिक उपयुक्त इस संग्राम का सेनाध्यक्ष कौन हो सकता है? क्या आप इस दिशा में कुछ सोचेंगे? इसका प्रारंभ एक अत्यंत प्रभावोत्पादक पत्र से शायद हो सकता है, जिससे जनता को इस विषय में जाग्रत किया जा सके। इसके प्रकाशन की आर्थिक जिम्मेदारी वहन कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी।

मेरे अभिवादन सहित, प्रिय स्वामी,

भवदीय

जमशेदजी एन. टाटा

स्वामीजी द्वारा इस पत्र के उत्तर का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है, पर रामकृष्ण मिशन की पत्रिका 'प्रबुद्ध भारत' ने अप्रैल 1899 के अपने संपादकीय में टाटा की योजना की बहुत प्रशंसा की है। उनके लेख की कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत है- "हम दोहराते हैं कि भारत में राष्ट्रहित की इससे सुन्दर योजना सामने नहीं आई है। सारे राष्ट्र को अपने संकीर्ण हितों को भूलकर इस योजना को सफल बनाने में लग जाना चाहिए।

जून 1899 में भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानंद के साथ इंग्लैंड गई थीं। ब्रिटिश शासकों में टाटा की योजना का विरोध हो रहा था। भगिनी निवेदिता तथा स्वामी विवेकानंद की अमेरिकी प्रशंसक श्रीमती ओल बुल ने ब्रिटिश शिक्षा-विभाग के सर जार्ज बर्डवुड के साथ श्री टाटा के रात्रिभोज की व्यवस्था की। सर जॉर्ज बर्डवुड ने उठते-उठते कहा-'अन्य लोगों से इस योजना पर विचार-विमर्श न कर आप 30 लाख रूपए बिना किसी हिचकिचाहट के प्रोफेसर रामशय के हाथ में सौंप दीजिए तथा उन्हें सारे अधिकार दे दीजिए।'

इधर लार्ड कर्जन ने इस योजना का खुला विरोध किया। प्रोफेसर रामशय को इस योजना की गहराई में जाकर अपनी रिपोर्ट देने का भार दिया गया। प्रोफेसर रामशय ने भी इस योजना का समर्थन नहीं किया। भारत सरकार की भारतीयों को वैज्ञानिक शिक्षा देने में कोई रूचि नहीं थी, वे तो केवल क्लर्कों के निर्माण की शिक्षा देना चाहते थे।

भगिनी निवेदिता ने अपने प्रयत्न जारी रखे। उन्होंने एक खुला पत्र ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्यों को अपने नाम से भिजवाया तथा साथ में अमेरिकन दार्शनिक प्रो. विलियम जेम्स की इस योजना पर राय भेज दी। यह सब सन् 1900 के शेष में हुआ। स्वामी विवेकानंद की मृत्यु सन् 1902 में हो गई। जमशेदजी की भी मृत्यु उसी अवधि में हो गई। श्रीमती टाटा भी चल बसीं, पर भगिनी निवेदिता व श्री टाटा के सहयोगी श्री पादशाह के प्रयत्नों से रिसर्च इंस्टीच्यूट की स्थापना हुई। विज्ञान के क्षेत्र में भारत के प्रथम नोबुल पुरस्कार विजेता श्री सी.वी. रमन ने इस इंस्टीच्यूट का काम संभाला था।

श्री अरविंद घोष सन् 1893 में विदेश से भारत लौट आए थे। उन्होंने क्रांतिकारियों की गुप्त संस्थाओं का भगिनी निवेदिता व अन्य क्रांतिकारियों के साथ संगठन किया। स्वामीजी की महासमाधि हो चुकी थी, पर पन्द्रह दिन तक स्वामीजी ने उन्हें दर्शन दिए और उनके उच्च स्तर के यौगिक प्रश्नों का समाधान किया। विख्यात अलीपुर बम कांड में वे पकड़े गए। कलकत्ता की जेल में उन्हें कृष्ण के दर्शन प्राप्त हुए। जेल कृष्ण मंदिर बन गया तथा श्री अरविंद अलौकिक आनंद में डूबे रहे। जेल से छूटते ही वे पांडिचेरी चले गए तथा वहाँ विश्वविख्यात पांडिचेरी आश्रम बनाया।

स्वामी विवेकानंद की रचनाओं को पढ़कर भारत के नवयुवकों में स्वाधीनता प्राप्त करने की तीव्र प्रेरणा जाग्रत हुई। क्रांतिकारी इन पुस्तकों को पढ़कर अंग्रेजों के अत्याचार से क्रुद्ध हो उनकी हत्या कर देते तथा हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ जाते। राजनैतिक नेता तथा 'गीता' के महान टीकाकार लोकमान्य तिलक स्वामीजी से मिलने बेलूर मठ आए। सन् 1898 में पूना में प्लेग का प्रकोप हुआ। प्लेग को रोकने के लिए दो ब्रिटिश अधिकारी रैंड व आर्यस्ट ने पूना में अत्यंत अत्याचार किया।

चाफेकर परिवार के तीन बालक (18,20,22 वर्ष आयु के) इन अधिकारियों के अत्याचार से अत्यंत उत्तेजित थे। वे लोकमान्य तिलक से मिले तथा उन्हें अपनी योजना बताई। तिलक महाराज ने उन्हें अत्यंत सावधान रहने के लिए कहा। इन उत्साही युवकों ने अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी और पकड़े गए। तीनों भाईयों को फाँसी की सजा हुई। जब स्वामी विवेकानंद ने यह सुना तो उन्होंने कहा कि भारत का साहस व देशभक्ति अभी मरी नहीं है। आजाद भारत में इन भाईयों की सोने की प्रतिमा लगाई जाएगी - ऐसे थे स्वामी के उद्‌गार।

4 जुलाई 1902 को स्वामीजी ने महासमाधि ली। समस्त गुरूभाई शोक में डूब गए। भारत के घर-घर में विवेकानंद की यश-कीर्ति फैल चुकी थी। उन्होंने कहा था कि आने वाले भारत का भविष्य इतना उज्ज्वल व गौरवमय होगा कि इसकी प्राचीन उपलब्धियाँ हल्की दिखने लगेंगी।

आतंकवादी कुचक्र और हम

- इन्द्रेश कुमार

आज सम्पूर्ण विश्व ही आतंकवाद की जकड़न में फंसा उससे मुक्ति का मार्ग खोज रहा है। परन्तु भारत में आतंकवाद की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तब ध्यान आता है कि सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्र एवं सम्पूर्ण जनजातीय क्षेत्र, आतंकवाद के लगभग दो सौ आतंकवादी समूहों की क्रूर चपेट में फंसा है। जम्मू कश्मीर से चलें तो साथ लगता है पंजाब और आगे नेपाल से जुड़ा उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल का तराई क्षेत्र, बिहार, झारखंड, बंगाल, पूर्वोतर क्षेत्र (असम, मेघालय, अरूणाचल, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा) उत्कल, आन्ध्र, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि के अनेक क्षेत्र पूरी तरह आतंकवाद की जकड़न में है। इतना ही नहीं नेपाल व भूटान आदि हिमालयी देश पिछले कुछ वर्षों से आतंकवाद की भट्टी में झुलस रहे हैं।

भारत विभाजन की मांग:- आतंकवाद के कई नाम हैं, कहीं माओवाद तो कहीं नक्सलवाद। कहीं यह पीपुल्स वार ग्रुप के रूप में है तो कहीं लिबरेशन आर्मी के नाम पर अनेक प्रकार से कार्यरत हैं। प्रत्येक आतंकवादी दल का नारा भारत से आजादी का नारा है। विशेषज्ञ कहते हैं कि आतंकवाद इसलिए जोर पकड़ रहा है क्योंकि गरीबी, अनपढ़ता एवं बेरोजगारी हैं, परन्तु किसी भी आतंकवादी समूह का नारा रोटी, कपड़ा और मकान नहीं बल्कि अलगाववाद की राह पर चलते हुए भारत विभाजन की मांग को लेकर सशस्त्र संघर्ष करना है। हमारे सामने पंजाब का उदाहरण है। वहां आतंकवाद रोटी, कपड़ा और मकान देने से समाप्त नहीं हुआ बल्कि जब उसे सख्ती से कुचला गया और आम समाज को आतंकवाद के असली अर्थात उसके घिनौने चरित्र को जब बताया गया तभी पंजाब आतंकवाद मुक्त हुआ।

विदेशी षड्यंत्र का घिनौना रूप :- आतंकवाद का एक और चरित्र ध्यान में आता है कि प्रत्येक आतंकवादी दल के मुखिया विदेशी हैं या विदेश में शरण लिये हुये हैं। उनके बैंक खाते भी भारत से बाहर हैं। अधिकांश प्रशिक्षण शिविर भी भारत से बाहर पाकिस्तान, पाक अधिकृत कश्मीर, अफगानिस्तान, बंगलादेश, सूडान अथवा पड़ोसी देशों में चल रहे हैं। अनेक प्रशिक्षण शिविर भारत के ऐसे घने जंगलों में है जहां मानव जाति बहुत कम है। जब भी भारत सरकार इनके विरूद्ध कठोर कार्यवाई करती है, उस समय प्रत्येक आतंकवादी समूह और उसके नेता भाग कर अन्य देशों में शरण लेते हैं तथा जोर-जोर से चिल्लाते है कि वार्ता में किसी न किसी अन्य देश की दखल चाहते है। पकड़े जाने वाले हथियार भी स्पष्ट संकेत देते हैं कि वे भारत से बाहर अन्य किसी देश में निर्मित हैं। मैंने पिछले वर्ष में कश्मीर घाटी व मणिपुर के अपने विस्तृत प्रवास में स्थानीय प्रबुद्ध नागरिकों के सामने आतंकवाद के बारे में बताते समय कहा कि पड़ोसी यानि आईएसआई ने कश्मीर में कश्मीरियों के द्वारा लाखों कश्मीरियों को उजाड़ दिया और मरवाया है, इसमें हिन्दू भी हैं, मुसलमान भी हैं। विदेशियों ने मणिपुरियों द्वारा हजारों मणिपुरियों का कत्लेआम करवाया है। यही स्थिति प्रत्येक प्रान्त में दिखाई देती है। इसलिए हमें विदेशियों की इस खतरनाक चाल को समझना चाहिए कि वे हमारे द्वारा हमारे समाज व देश को बर्बाद करने का घिनौना खेल खेल रहे है।

संवेदनशील क्षेत्रों में अलगाववाद की दुर्गन्ध:- आतंकवाद का अध्ययन करने पर एक बात और ध्यान में आती है कि आतंकवाद से ग्रस्त जो क्षेत्र हैं या तो वे सीमान्त (समुद्र और जमीन) हैं या फिर मुस्लिम व ईसाई बहुलता अथवा उनकी गतिविधियों के है। जिस-जिस क्षेत्र में कम्युनिस्ट दलों की गतिविधियां हैं वे क्षेत्र भी आतंकवाद ग्रस्त है। इन संवेदनशील क्षेत्रों में विचरण करो तो ध्यान आता है कि इन सभी ताकतों द्वारा वहां के स्थानीय समाज में हिन्दू, हिन्दुत्व तथा हिन्दुस्थान के प्रति एक विशेष प्रकार की नफरत पैदा की जा रही है। स्थानीय जनता को शेष समाज से जोड़ने की बजाय, छोटे-छोटे भाषायी, जातीय व पंथीय समूहों में उभार कर उनमें एक अलग पहचान का भाव जगाकर उनके नवयुवकों को प्रशिक्षित कर देश, पूर्वजों व संस्कृति से दूर किया जा रहा है। गरीबी, अनपढ़ता व पिछड़ेपन के लिए हिन्दू समाज को दोषी ठहराकर उनके विरूद्ध भड़काया जा रहा है। इसमें कुछ दोष पढ़े-लिखे, संपन्न एवं कथित ऊंची जाति वालों का भी है कि उन्होंने अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग व गरीब से जितना प्यार भरा व सम्मानजनक व्यवहार रखना चाहिए था नहीं रखा। परन्तु इस सबके बावजूद यह सत्य है कि विदेशी ताकतों के इशारों पर नाचने वालों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु समाज को बांटने व देश को तोड़ने वाले बीज ही बोए हैं। धीरे-धीरे देश की एकता व अखंडता को भी ग्रहण लग गया है। सीमान्त क्षेत्रों में बढ़ते मदरसों व चर्चों की संख्या चिन्ता का विषय बनती जा रही है।

मैकाले, मार्क्स पुत्रों की लज्जात्मक भूमिका:- आतंकवाद का पिछले 40 वर्षों से अधिक का चरित्र एक और कहानी भी कह रहा है। आतंकवादियों ने भारत के संसद भवन, विधानसभा, सैनिक छावनी एवं पुलिस मुख्यालय, मन्दिर, गुरूद्वारा, आश्रम, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि स्थानों पर अलग-अलग समय में रक्तरंजित हमले किए है। हजारों, लाखों निरपराधों की हत्याएं की हैं। परन्तु किसी भी आतंकवादी गिरोह ने चर्च, कानवेंट, पादरी अथवा नन पर हमला कर हत्या करना तो दूर की बातें हैं, सम्भवतया धमकी भरा पत्र भी नहीं भेजा। किसी भी आतंकवादी गिरोह ने मस्जिद, मदरसा, मौलाना, इमाम पर हमला कर हत्या करना तो दूर धमकी भरा पत्र तक नहीं भेजा। इतना ही नहीं, आतंकवादियों द्वारा मानवाधिकार समूहों को धमकी अथवा उनकी हत्या का प्राय: कोई समाचार पढ़ा, सुना नही। कट्टरपंथी मुस्लिम समुदाय, धर्मान्तरणवादी ईसाई समाज, मार्क्स पुत्र कम्युनिस्ट संस्थाएं तथा मैकाले शिक्षा पद्धति के गुलाम तथाकथित सेक्युलरिज्म का लबादा ओढ़े मानवाधिकार समूहों ने कभी आतंकवाद से पीड़ित (विस्थापित, विकलांग, विधवा, अनाथ आदि) समाज की मदद का कोई काम नहीं किया। सभी ने यह जरूर पढ़ा-सुना है कि आतंकवादियों ने विदेशी इशारों पर नाचने वालों के पास या ठिकानों पर शरण ली। सत्य कहा है चोर ही नहीं उसकी मां को भी जानिए तभी उपचार ठीक से होगा। केवल चोर (अपराधी) का उपचार किया और उसको पालन-पोषण और जन्म देने वाले रह गये तो बार-बार आतंकवाद सिर उठाता रहेगा। इस गंभीर प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है। इन हालतों में तथा वैसे भी जो देशभक्त समाज है उसका कर्तव्य बनता है कि निडर होकर कट्टरपंथी, अलगाववादी, मार्क्स-मैकाले पुत्र व विदेशी ताकतों के एजेंटों के विरोध में डटकर खड़े हों।

मीडिया की भूमिका:- आतंकवाद के संदर्भ में मीडिया की भूमिका को भी जानना आवश्यक है। आज यहां भी मार्क्स-मैकाले के मानसपुत्रों का वर्चस्व नजर आता है और राष्ट्रभाव से ओतप्रोत लोग पिस रहे हैं। उदाहरण के लिए जाहिरा शेख तथा इशरत काण्ड हमें ठीक से सत्य और गलत को बताने में सक्षम है। इशरत जहां काण्ड में गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी व अन्य कुछ हिन्दू नेताओं की हत्या की साजिश को पाकिस्तान की मदद से रचा गया। गुजरात पुलिस व प्रदेश गुप्तचर विभाग की जागरूकता के कारण समय पर कार्यवाही होने के कारण आतंकवादियों को मार गिराया गया। इससे एक बड़े हत्याकाण्ड व रक्तपात पूर्ण हिन्दू-मुस्लिम दंगों से देश बच गया। परंतु आश्चर्य है कि तथाकथित सैक्युलर, कट्टरपंथी कम्युनिस्ट, मानवाधिकार समूह तथा इनके वर्चस्व का मीडिया राग अलापने लगा कि इशरत जहां निर्दोष थी और उसे हीरोईन के रूप में स्थापित करने लगा और राष्ट्रीय एवं हिन्दुत्व की शक्तियों को बदनाम करने लगा। ठीक उसी समय लश्करे तैयबा ने वक्तव्य दिया कि मारे गए आतंकवादी पकिस्तानी थे। इशरत जहां हमारी कार्यकर्ता थी और इनसे पकड़े गए विस्फोटक, हथियार व राशि चौंकाने वाले थे तब मीडिया व इन चेहरों को सांप सूंघ गया और उन्होंने चुप्पी साध ली। गुजरात पर जाहिरा शेख (बेस्ट बेकरी काण्ड) के वक्तव्य को जबरदस्ती दिलवाकर ऊपर चर्चित ताकतों ने मानवता व देशभक्ति को अपराधी स्थापित करने की भरपूर कोशिश की और दुर्भाग्य है कि देश की न्यायपालिका में से कुछ लोग इनके साथ मिल गये। परन्तु दिल्ली में सिक्खों का कत्लेआम, कश्मीर में लाखों हिन्दुओं को उजाड़ने पर ये सभी आज तक भी मुंह को ताला लगाए हैं। आज जब जाहिरा शेख के बयान बदल गए तब तीस्ता सीतलवाड़ व अन्य शोर मचाने वाली ताकतें जेल में, कटघरे में क्यों नहीं? वर्तमान में मीडिया में प्रभावी लोगों का चरित्र ब्रिटिश काल में जैसे चापलूस लोग अंग्रेज भक्ति में मग्न थे वैसा ही राष्ट्र विरोधी एवं बिका हुआ नजर आता है। जैसे आजादी के समय में भारत भक्त मीडिया था उसी प्रकार से मीडिया में राष्ट्रभाव से ओतप्रोत लोगों को इस चुनौती को स्वीकार कर आगे आना होगा। अगर वे चुपचाप सहेंगे तो समय उन्हें भी माफ नहीं करेगा।

भारत सरकार ने जैसे मित्र देश भूटान में आतंकवादी शिविरों को नष्ट किया वैसे ही नेपाल, म्यांमर, श्रीलंका आदि में भी इनके अड्डों को ध्वस्त करने की कार्यवाही हेतु राजनैतिक व कूटनीतिक दबाव बनाना है।

पाकिस्तान व बांग्लादेश आतंकवाद व घुसपैठ का भयानक खेल भारत में खेल रहे हैं। वर्षों से सभी प्रकार के प्रयत्नों के बावजूद अब हमें अमेरिका, इजराइल, चीन के मार्ग को अपनाना चाहिए।

जनता में जो लोग व समूह आतंकवाद को प्रश्रय देते है उनका सामाजिक बहिष्कार करने हेतु व्यापक जन जागरण करना चाहिए।

घुसपैठियों (विदेशी) की पहचान कर कम से कम उनके नाम मतदाता सूची से निकाले जाये ताकि कोई भी घुसपैठिया सांसद, विधायक अथवा किसी भी प्रकार का महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर भारत व हम भारतीयों के भविष्य का फैसला करने वाला न बन सके।

हर समझदार आदमी (महिला, पुरूष) को अपने चारों ओर के बारे में जागरूक होना चाहिए ताकि हमारे गांव, मोहल्ला, बस्ती, कालोनी में कोई अवैध मनुष्य एवं वस्तु तो नहीं आ रही है। उसकी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष जानकारी उपयुक्त जगह पर पहुंचानी चाहिए। जागरूकता भी दुर्घटनाएं रोकने का प्रभावी हथियार व मार्ग है।

भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारी के विरूद्ध विशेष रूप से देश के युवकों को जंग लड़ने की तैयारी करनी होगी न कि हिन्दुत्व व हिन्दु भूमि के विरूद्ध।

(हिन्दुस्थान समाचार)

विचार कणिका

मानवाधिकार व आतंकवाद के बीच पिसती निरीह जनता

- अम्बा चरण वशिष्ठ

आतंकवाद से मुकाबला करने में मीडिया का बड़ा योगदान रहा है और हो सकता है। इसका सबसे बड़ा व सफल उदाहरण है पंजाब, जहां अपने ऊपर अनेक हमलों, चेतावनियों, तथा अन्य डराने-धमकाने वाली हरकतों के बावजूद जालन्धर व चण्डीगढ़ से छपने वाले समाचारपत्र-पत्रिकाओं ने राष्ट्रवादी शक्तियों का झण्डा ऊंचा रखा। तब इलैक्ट्रोनिक मीडिया में मात्र दूरदर्शन ही था। इसकी बहुत बड़ी कीमत पंजाब केसरी के मालिक श्री लाला जगत नारायण व उनके पुत्र श्री रमेश चन्द्र को आतंकवादियों के हाथों शहीद होकर चुकानी पड़ी। तब प्रमुख समाचार समूहों के मालिक, सम्पादक तथा पत्रकार सुरक्षा बलों के कैदी बन जाने पर मजबूर हो गये थे। पर मीडिया ने सच का साथ न छोड़ा। हिम्मत न हारी। राष्ट्रहित को एक पल के लिए भी ओझल नहीं होने दिया गया। उनके इस धैर्य और साहस का फल सब को मिला- पंजाब को भी और देश को भी। आज पंजाब अपनी शांति व समृद्धि के लिए मीडिया के सकारात्मक रूख का ऋणी है।

पर आज आतंकवाद का सामना करने में सब से बड़ी अड़चन बन गई हैं कुछ मानवाधिकार संस्थायें व उदारवादी संगठन एवं व्यक्ति। जब किसी आतंकवादी घटना में निरीह-निर्दोष नागरिक मारे जाते हैं, बच्चे अनाथ हो जाते हैं, नवविवाहिताओं के सुहाग उजड़ जाते हैं, बुजुर्गों की सहारे की लाठी व रोटी का सहारा उठ जाता है तो मीडिया में समाचार व फोटो छप जाने के बाद तथा कुछ राजनैतिक दलों, संगठनों द्वारा घिसी-पिटी शब्दावली से भर्त्सना की औपचारिकता पूरी करने के बाद उनका उत्तरदायित्व खत्म हो जाता है। जब पुलिस मुठभेड़ में कुछ आतंकवादी मारे जाते हैं तो मीडिया व मानवाधिकार संगठनों की भौंहे चढ़ जाती हैं, कान खड़े हो जाते है और आंखे उसमें कुछ काला ढूंढने लगती हैं। अंसल प्लाजा दिल्ली व अहमदाबाद में इशरत समेत कुछ आतंकवादियों की मौत को ही ले लीजिए- कई दिन तो यही चर्चा रही कि निर्दोष मार दिए गये है, मुठभेड़ में नहीं पकड़ कर मारे गये। क्योंकि संदिग्ध पृष्ठभूमि के एक डाक्टर ने एक वरिष्ठ पत्रकार व तत्कालीन राज्य सभा सांसद को फोन पर सूचना दे दी तो उन्होंने उसकी बात को ईश्वर का सच और पुलिस के कहे को सफेद झूठ मान लिया। बड़ा हा-हुल्ला खड़ा कर दिया। उन्होंने तो यह भी जानने की कोशिश नहीं की कि मारे जाने वाले भारतीय थे या पाकिस्तानी। पर बाद में सत्य छुपा नहीं, बाहर आ ही गया।

इसमें कोई शक नहीं कि तत्कालीन उत्तेजना में कई बार आक्रोश, गुस्से में ज्यादती भी हो जाती है जो सामान्यत: नहीं होनी चाहिये। बाद में तो संबंधित व्यक्ति पश्चाताप भी करता है। हमारी भारतीय दण्ड संहिता में तो प्रावधान भी है कि तत्कालीन उत्तेजना के कारण हुए अपराध के लिये भी काफी हद तक छूट दे दी जाती है। पर हमारा मीडिया व मानवाधिकार संगठन इन परिस्थितियों में भी हमारी सेना, पुलिस व अर्धसैनिक बलों के अधिकारियों-कर्मचारियों को किसी चौराहे पर सूली पर लटकाना चाहते है। उन देशभक्त जवानों को जो बर्फ व कड़कती सर्दी में, आग बरसाती धूप में, आंधी-तूफान में सड़कों, गली-कूचों व जंगलों की खाक छानते फिरते है। वे आतंकवादियों की गोलियों के आगे अपनी छाती ताने घूमते है ताकि हम शांति से अपना-अपना कार्य पूरा कर सकें और अपने घर की सुख-सुविधा में आराम की नींद सो सकें। हमारे सुरक्षा बलों की किसी व्यक्ति या समूह विशेष से कोई निजी द्वेष या निजी दुश्मनी नहीं होती। जो कुछ भी ठीक-गलत होता है वह मात्र अपनी समर्पित सेवाओं के निर्वहन में ही होता है। जहां किसी भी निर्दोष व्यक्ति या समूह के मानवाधिकारों के हनन का किसी को अधिकार नहीं है, वहीं अपने सुरक्षा बलों की हर गतिविधि को शक की नजर से देखने की नकारात्मक प्रवृत्ति रखना भी देश के हित में नहीं है। इससे अपनी जान की बाजी लगाकर सीमा पर आतंकवाद से जूझते हमारे सैनिकों का मनोबल गिरता है।

क्या विडम्बना है कि आतंकवादी तो निरीह-निर्दोष जनता के मानवाधिकारों का प्रतिदिन हनन करते फिरते हैं जब तक कि

कानून के हाथ उन तक नहीं पहुंच पाते। जब वे पकड़े जाते हैं तो मानवाधिकारों के पैरोकार इन्हीं नृशंस हत्यारों के मानवाधिकारों की रक्षा के लिये कूद पड़ते हैं।

दुर्भाग्य तो यह है कि जो अपनी जान को जोखिम में डाल कर राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं और साधारण जनता के मानवाधिकारों की रक्षा कर रहे है, उन पर तो मानवाधिकारों के हनन के मुकद्दमे चलाये जायें और जो लोग निर्दोष-निरीह जनता के मानवाधिकारों का घोर हनन कर रहे है उनके मानवाधिकारों की रक्षा का जोर शोर से डंका बजाया जाये।

केवल एक उदाहरण ही काफी होगा। जब पंजाब में आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर था तब एक पुलिस अधीक्षक स्वर्गीय सन्धू बहुत मशहूर या बदनाम हुये क्योंकि आतंकवादी उनके नाम तक से डरते थे। सन्धू अपनी जान को हथेली पर रख कर अपना कर्तव्य निभाते रहे। पर जब आतंकवाद का सफाया हो गया और सरकार बदली तो सरकार और मानवाधिकार संस्थाओं ने उनके विरूद्ध इतना हो-हल्ला खड़ा कर दिया कि वह बहादुर भी इतना कायर बन गया कि आत्महत्या करने पर मजबूर हो गया। आज है कोई उस वीर के परिवार की सुध लेने वाला? ऐसे हालात में कौन अपना कर्तव्य निभाने की हिम्मत दिखा सकेगा?

हमें तो राष्ट्रहित, मानवाधिकारों, आतंकवाद, राष्ट्रविरोधी गतिविधियों, सरकार के प्रति कर्तव्यों के बीच कोई सामंजस्य, तारतम्य बिठाना होगा। आतंकवादियों के ही नहीं किसी सामान्य नागरिक के भी मानवाधिकार राष्ट्रहित से ऊपर नहीं हो सकते। जो व्यक्ति औरों के मानवाधिकारों को अपने पांव तले रौंदता है, किसी जघन्य अपराध के लिये पकड़े जाने पर उसके मानवाधिकार पावन व अभेद्य नहीं बन सकते।

यदि हमें आतंकवाद पर विजय प्राप्त करनी है तो हमें कड़वे घूंट तो पीने ही होंगे।

(हिन्दुस्थान समाचार)

ज्ञान! *शील!!* *एकता!!*

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

भारत का अग्रमान्य छात्र संगठन जो विश्व की प्राचीनतम सभ्यता को वैश्विक समुदाय में गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त कर एक शक्तिमान, समृद्धशाली एवम् स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में पुनर्निर्माण करने के भव्य लक्ष्य से प्रतिवद्ध है।

छात्र शक्ति-राष्ट्र शक्ति

।। वन्दे मातरम् ।।

3241021025
9312521025
9312564273

छात्रशक्ति को सम्बोधित करते परिषद् के महामंत्री श्री के.एन. रघुनन्दन

सरकार्यवाह मा. मोहन राव भागवत द्वारा प्रतिनिधियों को उद्बोधन

देशपाण्डे दम्पती को यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार प्रदान करते खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा

अधिवेशन में भाग लेने आए विदेशी प्रतिनिधि

SHRI DEEPAK ADHIKARI
Academic Student's Council,
Post Box No. 11140, Seva Sadan,
Sina Mangal, Kalimatidol, 9 (NEPAL).
Tel. : 00977 - 1 - 499849